November 2017

RAINBOW SATHI
रेनबो साथी

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

TEAM Work

Year 2, Issue 5, November 2017

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

ADVISIORY BOARD
K. LALITHA, T.M. KRISHNA, MAITREYI PUSHPA, GEETA RAMASWAMY, K. ANURADHA

EDITORIAL BOARD

CHANDA (DELHI)

SAHITYA (HYDERABAD)

SHIVAM (PATNA)

S KUMAR (HYDERABAD)

AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON

CHILD JOURNALIST

SUMMI MUNIR, DELHI

DEEPAK AMAN, DELHI

SABITHA, HYDERABAD

A KUMAR, HYDERABAD

NAGA LAXMI, HYDERABAD

BHAVANI, CHENNAI

KAJAL, PATNA

BINDU, PATNA

ASMA, PUNE

SAVITRI, BANGALORE

KEERTHANA, BANGALORE

SUBHASHREE, KOLKATA

KABITA, KOLKATA

BAJRANGI, PATNA

MUSKAN, PATNA

AMITA KUMARI, PATNA

ASHA KUMARI, PATNA

SHERNISHA, CHENNAI

CITIZEN JOURNALIST

ARTI SINGHASAN, DELHI
DIVYA, HYDERABAD
CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD
PRIYADHARSHINI, CHENNAI
KHUSHBOO, PATNA
AMRUTA, BANGALORE
KANCHAN PASWAN, KOLKATA

SUPPORT TEAM

RAJESHSREE, KOLKATA
SAMAD S.A, HYDERABAD
SHINY VINCENT, BANGALORE
A. ANANDARAJ, CHENNAI
SHUBHADA, PUNE
BABU S, HYDERABAD
DEEPTHI, DELHI
SUDHA RANI, HYDERABAD
DR.SALMAN, PATNA

Design:
ROHIT KUMAR RAI

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

Editor's Column

हम बोलें दुनिया सुने...

दोस्तो

रेनबो साथी, रेनबो होम्स की पूरी टीम को मुबारकबाद!

सबकी मदद, प्यार के चलते आप सब की प्यारी पत्रिका रेनबो साथी ने एक साल पूरे कर लिए हैं। चाइल्ड जर्नलिस्ट और सिटीजन जर्नलिस्ट की पूरी टीम अपने प्रेस आई-कार्ड और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने और समाज में हस्तक्षेप करने के लिए तैयार है। इस दौरान हम सबने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा और वह सब लिखा-पढ़ा जो आज के दौर की सही-सही तस्वीर पेश करता है।

इस तरह से हमने अपने दर्द-मुश्किलों-संघर्षों को देश के इतिहास-भूगोल और वर्तमान में दर्ज कराया और अपनी दावेदारी पेश की। अपनी इस पत्रिका के जरिए हमने ऐलान किया कि हम अपना हक, अपने अधिकार और अपनी जगह लेकर रहेंगे और हमारे बढ़े हुए कदमों को कोई नहीं रोक सकता।

बच्चों की मांगों में कभी भी स्ट्रीट चिल्ड्रन, मैला ढोने वालों और साफ-सफाई करने वालों के बच्चों, कचरा चुनने वालों के बच्चों, सेक्स वर्कर के बच्चों, यौन हिंसा के पीड़ित बच्चों और इस तरह के अनगिनत हाशिए पर डाले गए समुदायों-तबकों के बच्चों की मांगें नहीं रखी जातीं। हम रेनबो साथी में बात इन्हीं बच्चों, यानी हमारे बच्चों की मांगों-सपनों के बारे में करते हैं और उन्हें मुख्यधारा में लाने की कोशिश करते हैं।

Dreams: Riya Gohire
Age-14, Class-8TH
Shivajinagar Rainbow homes, Pune

इस अंक में होम्स के बच्चों ने जाकर सड़क पर रहने वाले बच्चों यानी स्ट्रीट चिल्ड्रन से बात की। उनकी दुनिया का हालचाल लिया। उनके सपनों को दर्ज किया। यह डॉक्यूमेंटेशन ऐतिहासिक काम है और इसके लिए पूरी टीम को विशेष रूप से बधाई। हम बच्चों की हालत का सीधा रिश्ता देश की स्थिति से है। दुनिया के 119 देशों में भूखे लोगों की संख्या के हिसाब से भारत 100वें स्थान पर है। यानी देश में खाली पेट सोने वालों की तादाद बहुत ज्यादा है और इसमें सबसे ज्यादा बच्चे ही हैं। बेघर और कुपोषित बच्चों की संख्या में भी हमारा देश सबसे खराब हाल में है। रेनबो साथी के इस अंक में बच्चों ने जो लिखा है, उससे साफ होता है कि आज भी करोड़ों बच्चों के लिए दिन में तीन बार खाना मिलना, रहने के लिए घर होना, प्यार और देखभाल मिलना, सुरक्षित माहौल मिलना, पढ़ाई का मौका मिलना बहुत दूर का सपना है। ये कितने शर्म और चिंता की बात है। इस हालत को बदलने के ही लिए हम सब काम कर रहे हैं।

बच्चों के जीवन का अधिकार, सुरक्षा, डेवलपमेंट और निर्णय में भागीदारी के अधिकार को राष्ट्र की पहली प्राथमिकता घोषित किया जाना चाहिए। हमें अपने भारत को बच्चों के मित्रवत, बराबरी में विश्वास रखने वाला, नफरत और भेदभाव से मुक्त देश बनाने के लिए साथ आना होगा।

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak world listens

FRIENDS

HEARTFUL CONGRATULATIONS TO TEAM OF RAINBOW SATHI AND RAINBOW HOMES!

With your love and support, your favorite magazine has completed one year. Child Journalists and Citizen Journalists along with their press cards are committed to move ahead and put their mark on society. During this period we all learned a lot from each other. We were successful in reflecting the real picture of our time.

We were able to put our pain, problems, struggles and aspirations in the forefront through Rainbow Sathi. Now no hurdles can stop our way. When people or policy makers talk about children's demands, they never think of aspirations of street children, They also never think about children belonging to the marginalised sections like manual scavengers, sanitation workers, rag pickers, sex workers, adivasis and minorities. In Rainbow Sathi we are putting demands of our children in forefront and and making the world to listen.

In this issue children from our homes. This kind of documentation I feel that this kind of documentation is historic and kudos to our team members for this effort. We are worried that globally India is among worst nations in terms of hunger. Children are among the worst hit from this. issue through articles written by children we get clear picture that in India for millions of children three time meal, secured home, toilets, love & care and basic education are still a distant dream. We are fighting to change this scenario. Children's right. Children right to life, security, development and participation in decision making should be declared top-most national priority. We have to come together to make India child friendly, equitable and hatred & discrimination free

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!

Life is Difficult without Parents

Amrutha,
B.com 1st year, 18 years
St. Aloysius College
Rainbow Homes
Bangalore

Every child has right to get a care from mother and father. How will be world without father and mother? This is one of the most complicated questions!! The first word every child learns to speak is mother. Before telling my experience I want to share one short story with you. "It was during winter season. There was a man without proper clothes and food. His name was Ram. He was searching piece of cloth in the garbage. Suddenly he saw one bag full of money. He was very surprised and also happy. He took all the money. He bought a house, car, gold everything he needed. But still he was unhappy, but he didn't know exact reason. Once he was walking on the road. He saw few people sleeping on road. They had a very small hut. The mother was feeding her child, and the child was very happy. Every day that man will pass by the same way and every day he will see the happiness of the small boy. One day he called that small boy and asked him you are always happy, what is the reason? The boy smiled and pointed towards his mother and father. Then the man realized that the happiness is not in the money or wealth. It is there in love, especially in love from the parents. This short story has got high moral. I too felt like that man. I have everything, like I am studying, I have friends, mostly I have everything which is required for me. But still somewhere I feel unhappy. The reason is though we can buy everything with money but every child wants love from mother and father. I feel bad when I see some parents always busy with their works. They think they are struggling to provide their child good food and good education but still they fail to give their love to the child. If they want to take care of their child then they should first give him their love. Now see the situation of a person who has lost mother and father. The life of such child is totally different from others and it is very difficult. When I realized that my parents are no more I was so sad. I was full blank about my future and I was not ready to accept the fact. But later I got used to it. Still I can say one thing that the presence of parents in life is always most important.

माता-पिता के बिना दुनिया कैसी होगी?

यह सबसे कठिन सवाल है। दुनिया में आकर बच्चा पहला शब्द मां या अम्मा बोलता है। अपना अनुभव बताने से पहले मैं छोटी कहानी आपके साथ साझा करना चाहती हूं। एक बार सर्दी के मौसम में एक आदमी बिना पूरे कपड़ों और खाने के परेशान था, कचरे में खाना ढूंढ़ रहा था। अचानक उसे पैसे से भरा बैग मिला। वह चकित हो गया और खुश भी। उसने पैसे में कपड़े,घर, खाना सब ले लिया, लेकिन फिर भी वह खुश नहीं था। हालांकि उसे पता नहीं चल रहा था कि खुश क्यों नहीं था। एक दिन उसे सड़क किनारे सोते हुए लोग दिखे, छोटी सी झोपड़ी दिखाई दी, जहां एक मां अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। बच्चा बेहद खुश था। वह व्यक्ति अब रोज वहां से गुजरने लगा और उस खिलखिलाते बच्चे को देखता। एक दिन उसने उस बच्चे से पूछा कि वह इतना खुश क्यों है, तो उसने अपनी मां की ओर इशारा किया और कहा इनकी वजह से। तब उस आदमी को यह अहसास हुआ कि धन-दौलत में खुशी नहीं है। माता-पिता के प्यार के बिना जिंदगी में खुशी नहीं रहती।

इस कहानी का संदेश बहुत बड़ा है। मुझे भी बिल्कुल उसी आदमी की तरह लगा था। मेरे पास सब कुछ था, मैं पढ़ रही थी, मेरे पास दोस्त थे और जो भी मुझे चाहिए था, वह सब था। लेकिन फिर भी मैं नाखुश थी। हम सब कुछ पैसे से नहीं खरीद सकते। हर बच्चे को मां-पिता का प्यार चाहिए। मैं कई बार यह देखकर दुखी हो जाती हूं कि माता-पिता हमेशा अपने काम में व्यस्त होते हैं। उन्हें लगता है कि वे मेहनत करके अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा-दीक्षा देंगे, लेकिन वे अपने बच्चे को प्यार नहीं दे पाते। अगर वे बच्चे का ध्यान रखना चाहते हैं तो उन्हें उसे ज्यादा से ज्यादा प्यार देना चाहिए। जो बच्चे अपने माता-पिता को खो देते हैं, उनकी जिंदगी बहुत मुश्किल हो जाती है, वे बहुत कष्ट में होते हैं। जब मैंने जाना कि मेरे माता-पिता नहीं है, तो मैं बहुत दुखी हो गई। मेरा भविष्य बिल्कुल अंधकारमय हो गया। मैं इस बात को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। लेकिन धीरे-धीरे मुझे आदत पड़ गई। फिर भी मैं इतना कह सकती हूं कि जिंदगी में माता-पिता सबसे ज्यादा जरूरी है।

अफ़साना खातून, लॉरेटो रेनबो होम्स कोलकाता

Khushbu,
class-10, age 14.
Safeenah Rainbow home,
Patna.

हमारा अधिकार

पहला अधिकार जीवन का अधिकार
जिसमें हो जन्म, भोजन की दरकार
दूसरा अधिकार विकास का अधिकार
जिसमें मुफ्त शिक्षा का अधिकार
तीसरा है सहभागिता का अधिकार
सब में हो हमारी भागीदारी-
घर हो या परिवार
चौथा है सुरक्षा अधिकार
मिले सुरक्षा जीने की, राहों पर चलने की,
आगे बढ़ने की, शान से बढ़ने की
ये सब है हमारा अधिकार,
सबका अधिकार, प्यारा अधिकार

OUR RIGHTS

Right to life is first right
In which birth and food is needed
Second right is, right of development
In which right of education
Third is right of participation
Our participation should be there in home and family
Fourth, right of security
Safety of living and moving,
To move forward, to grow gracefully,
These all are our rights
Rights of all, lovely rights

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Child rights through participation

During the Child Rights week, I met 11 yr-old Sai Ram, living in a grave yard in Hyderabad. He shared his experiences. In his words…
My family needs a house to live in – me, my mom, dad, 9 year old sister Lakshmi, dad's another wife, her two children and mom's widowed sister. Sometimes, police and locals force us to vacate from here, then we leave this place for a while to come back. Once we hired a room for monthly Rs.2000/-, but owner locked house for non-payment. We need a safe house in summer, rainy and winter seasons, now we are struggling. My father, my friends' fathers, some moms also drink heavily. On the way home they fall down, sometimes on shit as all of us defecate in grave yard. We need toilets also. No liquor but we need water, as here we hardly get and I bathe weekly once. KCR, our chief minister, promised houses.

My mom cooks tasty food like palak, dal, rarely chicken. She treats me special, and ensures I eat at least twice in a day. People have money for liquor but not for food. We need ration rice, provisions to eat regularly. We need Aadhar and ration card.

I wish these old graves would vanish into a big play ground, then I can play Kho-kho, kabaddi, cricket, volley ball, even we walk without obstacles. Three years ago, mom sent me to school, never bunked class. I studied and played well. Suddenly aunt's husband became mad, mom took me there for 6 months. Then my name was struck off from school. Later I went to another school; this time, in rainy season we moved to another place to escape the flood, again I had to stop. Afterwards a sister asked me to come to their hostel, I readily agreed but my dad didn't send, he is scared of homes or hostels. Some time ago, police forcedly took me from my home in a van. Then govt harassed my father for Aadhar card and ration card but we didn't have them. My father was sad. I was locked in a children's jail. Somehow I ran away from there, and reached this grave yard……

My pleas or my mom's fighting didn't change my dad. He beats her for money. Many dads here beat their wives and children, and quarrel with others. My mother beats me if I fight with others. In my school, once I hit a boy. No one should beat any child.

Now I stay home, taking care of my sisters. Also go for rag picking. My mom is good, for her, I make Pachhi pulusu with onions, tomato rasam, and thick tomato curry and rice. I'd love to go to school-hostel …live in a house so that I can stud, eat regularly 3 times, wear uniform, play with friends, read books if I don't like to talk…. My friend Raju is in Sneh Ghar, his parents, though alcoholic, somehow accepted his interest, but I am not so lucky. I want to be a doctor

or police, to do good to society, and treat all the children. Actually, I wanted to run away from my home, but was scared of my dad and police -- they might beat me and my mom. Sister! Please convince my father to send us to the hostel."

Children! This is the story of Sai Ram! I found him intelligent and aspirational but struggling to overcome abuse. But he doesn't want to lose his mom's love. He is demanding from the state, civil society and abusive adults in his life for his right to life, protection, development, and participation.

This month I met and saw many children trafficked into begging and menial work, facing hunger and sexual violence, and forcibly removed from education. I also saw confident boys and girls leading their lives valiantly on the street. They all echoed their strong demand for their rights and entitlements as stated in Child Rights Convention. These are very much interlinked and can be assured only through the stability that comes from voluntary, long term, and comprehensive care in democratic families and spaces to share children's views and participation in decisions.

Dear girls and boys in Rainbow Homes and Sneh Ghars, congratulations for your fighting spirit in reclaiming your childhood! Let us join hands to reach out to many more child fighters still on the street.

Let us care for them and share our successes with them! Together we can….

Anuradha Konkepudi

Executive Director, Rainbow Homes

बच्चों को मिले फैसलों में भागीदारी का हक

बाल अधिकार सप्ताह के दौरान मेरी मुलाकात 11 साल के साई राम के साथ हुई जो हैदराबाद में एक कब्रिस्तान में रहता है। उसने अपने अनुभव मुझसे साझा किए–

'मुझे और मेरे परिवार को रहने के लिए एक घर चाहिए। कई बार पुलिस वाले और बाकी लोग हमें यहां से भगा देते हैं। फिर हम कुछ दिन के लिए कहीं और चले जाते हैं और बाद में लौट आते हैं। हमें एक सुरक्षित घर चाहिए जहां हम गर्मी, बारिश और सर्दी से अपना बचाव कर सकें।

हमें टॉयलेट चाहिए। हमें पानी भी चाहिए क्योंकि मैं हफ्ते में एक ही बार नहा पाता हूं। हमारे मुख्यमंत्री केसीआर ने हमें डबल बेडरूम घर का वादा किया था। यहां लोगों के पास शराब के लिए तो पैसा है लेकिन चावल के लिए नहीं। हमें राशन का चावल चाहिए ताकि हम दोनों वक्त खाना खा सकें।

मेरा मन करता है कि यह बड़ा सा पुराना कब्रिस्तान खेल के मैदान में तब्दील हो जाए जहां मैं कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट और वॉलीबाल खेल सकूं। तीन साल पहले मां ने मुझे स्कूल भेजा था। मैंने कभी कोई क्लास नहीं छोड़ी। लेकिन अचानक मेरी मौसी के पति पागल हो गए तो मां मुझे लेकर छह महीने के लिए वहां चली गई। तब मेरा नाम स्कूल से कट गया। बाद में मैं एक दूसरे स्कूल में गया लेकिन तब बस्ती में बाढ़ का पानी भर जाने से हमें कहीं और जाना पड़ा। तब फिर स्कूल छूट गया। मेरे पिता मुझे हॉस्टल नहीं जाने देते। मुझे अपने पिता से डर लगता है। वह पैसों के लिए मेरी मां को पीटते हैं। कई पिता अपनी पत्नियों व बच्चों को पीटते हैं। किसी को भी कभी किसी बच्चे को नहीं पीटना चाहिए।

मैं अब घर पर रहता हूं। अपनी बहनों का ध्यान रखता हूं। कूड़ा उठाने भी जाता हूं। लेकिन मैं किसी स्कूल के हॉस्टल में जाना चाहता हूं ताकि मैं बल्ब की रोशनी में पढ़ सकूं, तीन वक्त खाना खा सकूं, यूनिफार्म पहन सकूं, दोस्तों के साथ खेल सकूं, किताबें पढ़ सकूं... मेरा दोस्त राजू स्नेह घर में है। मैं भी डॉक्टर बनना चाहता हूं, समाज के लिए अच्छा काम करना चाहता हूं बच्चों का इलाज करना चाहता हूं। मैं घर से भाग जाना चाहता हूं लेकिन मुझे अपने पिता व पुलिस से डर लगता है। सिस्टर, मेरे पिता को मनाइए न कि वह मुझे और मेरी बहनों को भी हॉस्टल भेज दें।'

बच्चों, यह कहानी साई राम की है। मुझे वह समझदार लगा और महत्वाकांक्षी भी लेकिन वह शोषण से बचने के लिए संघर्ष कर रहा था। साथ ही वह अपनी मां के प्यार से भी वंचित नहीं होना चाहता। वह सरकार से, नागरिक समाज से और शोषण करने वाले बड़े लोगों से अपने जीवन, सुरक्षा, विकास और भागीदारी का अधिकार मांग रहा है।

इस महीने मैं कई बच्चों से मिली जिन्हें भीख मांगने या गंदे काम करने पर मजबूर किया जाता है, वे भूख और यौन उत्पीड़न का शिकार होते हैं और उन्हें जबरन स्कूल से बाहर कर दिया जाता है। साथ ही मैंने ऐसे हिम्मती लड़के व लड़कियां भी देखे तो सड़क पर रहते हुए भी बहादुर बने हुए हैं। वे सभी अपने अधिकारों के लिए मांग रख रहे हैं। ये सारी बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। जरूरी यह है कि लोकतांत्रिक परिवारों और दायरे में एक स्वैच्छिक, दीर्घकालीन और समग्र देखरेख में बच्चों के जीवन को स्थिरता मिले जहां वे खुलकर अपने विचार रख सकें और फैसलों में उनकी भागीदारी हो।

रेनबो होम और स्नेह घरों के प्यारे बच्चों। आप सभी द्वारा अपने बचपन को फिर से हासिल करने के लिए दिखाए गए जज़्बे को हमारा सलाम। आओ, हम सब मिलकर ऐसे कई और जांबाजों को ढूंढें जो अब तक सड़कों पर ही हैं।

आओ हम सब मिलकर उनकी देखरेख करें और अपनी कामयाबी को उनके साथ बांटें। हम सब मिलकर यह कर सकते हैं।

अनुराधा कोनकेपुडी,

एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर रेनबो होम्स

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

मौका मिले तो संवारेंगे जिंदगी, बनेंगे अच्छे इनसान

रेनबो साथी की खास पहल के तहत रेनबो होम्स के बच्चों ने सड़क पर रहने वाले बच्चों से बातचीत की और यह जानने की कोशिश की कि वे अपने जीवन और समाज से क्या अपेक्षा रखते हैं। उनके ही शब्दों में उनके जीवन को रखने की कोशिश की गई है ताकि पाठकों को यह अहसास हो कि किस तरह की स्थिति में आज बच्चे जी रहे हैं, मुसीबतों से लड़ रहे हैं। पटना, अमला टोला में स्थित मुस्कुराहट अमन स्नेहघर के मोहम्मद सुलेमान ने पटना स्टेशन पर रहने वाले दो बच्चों श्रवण और अजय का इंटरव्यू लिया का। पेश हैं बातचीत के अंश:

आपका नाम क्या है और कहां से आए हैं?
अजय: मुझे अपने माता-पिता के बारे में कुछ भी पता नहीं। बस इतना पता है कि रांची स्टेशन से पटना आया था और अब मेरी उम्र करीब 11 साल है।
श्रवण: मेरे माता-पिता का नाम कामेश्वर यादव और बसंती देवी है। मैं जहानाबाद के तिवारीबीगहा का रहने वाला हूं, मेरी उम्र 13 साल है।

आप कब से यहां रह रहे हैं?
अजय: सात साल से
श्रवण: दस साल से

यहां रहकर क्या करते हो?
अजय: पॉकेट मारता हूं, कभी-कभी कचरा चुनता हू और तकरीबन हमेशा ही नशे में रहता हूं।
श्रवण: चोरी करता हूं कचरा भी चुनता हूं मिले हुए पैसे से नशा भी करता हूं।

रहने के लिए तुमने स्टेशन को क्यों चुना?
अजय: इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है, न कोई देख-रेख करने वाला और न कोई पढ़ाने-लिखाने वाला, इसलिए मैं स्टेशन पर रहता हूँ।
श्रवण: मेरे माता-पिता गरीब थे घर में खाने को भी नही था। हम छह भाई बहन थे दूसरों के घर से मांग कर खाना खाते थे, मेरे माता-पिता मजदूरी करते थे दिक्कतें बढ़ीं तो में घर से भाग गया।

क्या स्टेशन पर रहने में कोई परेशानी होती है?
अजय: स्टेशन पर पुलिस मारती है, कभी कभी जेल में डाल देती है, हमेशा ही हमें कोई न कोई गाली देता ही रहता है।
श्रवण: बहुत परेशानी है, पुलिस पीटती है। स्टेशन में रहने वाले भी नशे में मार-पीट करते है।

IF WE GET CHANCE WILL IMPROVE LIFE & BECOME GOOD HUMAN

MD SULEMAN of MUSKURAHAT AMAN SNEH GHAR, AMALATOLA, PATNA intervied Two street children at patna railway- station Ajay & Shrawan

How long have you been here?
Ajay- From last 7 years.
Shrawan- From last 10 years

What you do here?
Ajay- I steal, sometimes pickup garbage and always take drugs.
Shrawan- I steal, pick up garbage too, I take drugs when I have money.

Why do you live at station?
Ajay-I don't have family. I am alone so I stay at station
Shrawan- My parents were very poor, there was no food only misery so I ran away.

What are the problems at station?
Ajay- Police beats & abuses & throws us out.
Shrawan- There is a lot of trouble, the police-men beat, even people at the station abuse us. Noise of vehicles also disturbs us.

What do you want to be in life?
Ajay- What people like us can become? A thief or even a robber.

यहां भी पलते हैं सपने: अजय से बात करते सुलेमान (ऊपर) और श्रवण के साथ (बांए)

जीवन में क्या बनना चाहते हो?
अजय: हम जैसे लोग जीवन में क्या बनेंगे, चोर डाकू ही बन सकते हैं।
श्रवण: हम लोगों से सभी डरते हैं, नफरत करते है। हम लोग तो चोर हैं आगे डाकू भी बन सकते हैं। वैसे सुधरने का मौका मिला तो मैं नशा और चोरी छोड़ दूंगा।

अगर आपको मौका मिले तो आप क्या सुधारना चाहेंगे?
अजय: हमें ये मौका कौन देगा, हमसे तो सभी घृणा करते हैं, फिर भी अगर मौका मिले तो चोरी और नशा करना छोड़ देंगे।
श्रवण: हम अच्छा इंसान बनना चाहेंगे।

सड़क या स्टेशन पर रहने में क्या-क्या परेशानी होती है?
अजय: सोने और रहने में परेशानी होती है, पुलिस से लेकर आम जनता तक सभी गाली देते हैं, आती-जाती गाड़ियों से परेशानी होती है।
श्रवण: हमें सोने की जगह नही मिलती, पुलिस आती है मारती है गाली देती है और भगा देती है। खाने की भी परेशानी रहती है।

इन सब परेशानियों से बचने के लिए क्या किया जा सकता है?
अजय: हम जैसों के लिए कोई सेंटर होना चाहिए, जहां हमारी जरूरत की सभी चीजें जैसे खाना, पीना, सोना, पढ़ाई आदि के सामान हमें मिलें। अगर ऐसा हो तो ही हमारी परेशानियां खत्म हो सकती हैं और हम भी जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।
श्रवण: मेरा कोई घर हो या हॉस्टल जहां हमारी जरूरतों को पूरा किया जा सके तो हम भी चमक सकते है। पढ़-लिख कर कुछ बन सकते हैं।

(अजय और श्रवण को रेनबो होम्स प्रोग्राम के बारे में बताया गया तो उन्होंने हमारे होम आकर बच्चों से मिलने और होम देखने की ख्वाहिश का इजहार किया।)

Shrawan- Who will allow me to become something. People are afraid of us, they hate us. Yes, if there is a chance we can improve.

If you get an opportunity then…?
Ajay- Who will give us this opportunity; people hate all of us, though if we get an opportunity then I will stop stealing & taking drugs.

What is the problem in staying at a road or station?
Ajay- We don't have fixed place to sleep. Police & locals torture us. We don't have any security.
Shrawan- First of all, there is no place for sleeping, if you sleep on the side of the road, then the police comes, beats, abuses and kicks us away.

How to avoid these troubles?
Ajay-We should have a center or place to stay, where our basic needs are fullfilled. If this happens then our problems can end and we too can move forward in life.
Shrawan- We should have a house or a place to stay which is full of love and care. Only then our future can be bright.

What is your expectation in life?
Ajay-I have potential to become rich and famous. The only condition is I should get guidance and care. People should trust me.
Shrawan- We can also shine and prove our talent provided we get security and love. There should be some one to guide us.

(Ajay and Shrawan were told about Rainbow Homes program, both of them expressed their desire to meet the children and see the homes.)

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

घर के बिना बहुत कष्ट है

सड़क पर जीवन बिताने वाले बच्चों की जिंदगी कैसी होती है। उनके सपने क्या है उन्हे सबसे ज्यादा कष्ट किन चीजों से होता है। उन्हें देश-समाज से किस तरह की अपेक्षाएं होती है, इस बारे में अधिक जानने के लिए चैन्ने की चाइल्ड जर्नलिस्ट **शेरनिशा** ने चैन्ने बीच स्टेशन पर रहने वाले **प्रसाद** से बातचीत की। प्रसाद ने खुलकर अपने सपने और अपनी आशाओं को साझा किया। पेश हैं उसके अंश:

आपका क्या नाम है और परिवार में कौन-कौन हैं

मेरा नाम प्रसाद है, उम्र 14 साल। मेरे पिता का नाम बाबू, मां का नाम गौरी, मेरे पिता का देहांत हो गया। मेरे दो भाई हैं, सूर्या और दीना।

आप सड़क पर रहते हैं, यहां क्या समस्याएं है

मैं बहुत साल से सड़क पर हूं। हमारा घर नहीं है। यहां सबसे बड़ी मुश्किल खाना बनाने की है, बैंक की बिल्डिंग के पास हम बनाते हैं, लेकिन वहां भी लोग डांटते हैं। हम फुटपाथ पर सोते हैं और कई बार लोग शराब पीकर गाड़ी चढ़ा देते हैं। नगर निगम के लोग आकर हमारा समान ले लेते हैं, बर्तन भी छीन लेते हैं। कई बार पुलिस वाले मेरे भाई को पकड़ लेते हैं और हमें 2000 रुपये का जुर्माना भरकर उन्हें छुड़ाना पड़ता है।

आपने पढ़ाई क्यों नहीं की

मैंने तीसरी तक पढ़ाई की है। आगे फिर पढ़ नहीं पाया। मन नहीं लगा और फिर तो सड़क ही पर आ गया।

क्या सपना है

मेरा सपना है अपना घर बनाने का। खुद का अपना घर। सड़क में रहकर बहुत कष्ट भोगा है, भोग रहा हूं।

बहुत से बच्चे सड़क पर हैं, तमाम बच्चों की समस्याओं का समाधान क्या है

सब बहुत कष्ट और अपराध में है। सबको घर मिलना चाहिए। सरकार को हमें एक छोटा घर देना चाहिए। घर के बिना जीवन में बहुत दर्द है।

आप क्या बनना चाहते हैं

मैं एक पुलिस अधिकारी बनना चाहता हूं। अभी तो मेरा कुछ करना मुश्किल है, क्योंकि मैं पढ़ा भी नहीं हूं। पढ़ाई के लिए पैसा चाहिए। वह मैं कमा सकता हूं।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

I dream for my own house life @ street is terrible

Interview with the a street boy in Chennai.

***Our Child journalist Shernisha had an interview with Master Prasad* at Chennai beach station**

Shernisha: What is your name and tell us about your family ?

Prasad: My name is Prasad , I am14 years. My parents are Babu and Gouri . My father has passed away. I have two brothers Surya and Dina.

Shernisha: How you came here and why do you live on the street?

Prasad: We have been living here on the street since long time. We live here because we don't have a house to stay.

Shernisha: do you miss your family ? when ?

Prasad: Yes. Whenever they arrest my brother I miss him a lot.

Shernisha: Why you did not study?

Prasad: I have studied only till class 3. I don't have any interest in studiying. My classmates used to tease me for not studying well.

Shernisha: What all problems do you face because you and your family stay on the street?

Prasad: Main problem here is for cooking. We have to face lots of problem for cooking outside. Normaly we use to cook adjacent to a bank building but they used to scold us. Sometimes people drink and ride bikes on the street while we are sleep. Corporation people also come and disturb us. Often they use to take away our utensils. Police officers disturb us because we sleep on the street, many times they take my brother & to the station we have to a pay fine around Rs. 2000 fine to get him out.

Shernisha: What is your wish in life?

Prasad: I want to build and have my own house that is my wish.

Shernisha: There are some more children here like you sleeping on the roads, what are the problems they face?

Prasad: Yes, they also don't have any house and face problem for sleeping.

Shernisha: What do you think would be a solution for this problem?

Prasad: House would be solution. Government can give us a small house to stay.

Shernisha: What do you wished to become when you were child?

Prasad: I wanted to become a police officer.

Shernisha: Can you do something for it now?

Prasad: Not possible. I did not study. We need more money for studying. We need to pay fees and all.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

NO ONE SHOULD LEAVE CHILDREN

Dhanalakshmi,
class-10, age 14.
B.B.M.P School.
Chamrajpet Bangalore

I would like to explain the condition of the children who live without parents. I want to share own story with everyone.

I lived in a village along with my mother, two elder sisters and one elder brother. My mother was the only was the bread earner. But she suffered from cancer and later passed away. After death of my mother my elder sister discontinued her studies and worked as a house maid and took care of all we sisters and brother. We all cried a lot as we felt there is no one to take care of us. One of our neighbor Priya referred us to a hostel. We all came to a hostel and started life again, all wanted to get well educated. My eldest sister studying for 2nd year B.com and she secured 78% in 12th std. My other sister also has great desire to achieve something and I also try to study very well. I am good in drawing and I wants to become a great architect.

It is my humble request to all the parents to not leave their children alone and go away from them. They love you a lot and miss you a lot. I know from my experience that the children who don't have parents, will not be able to study. They don't have safety and the society does not give them opportunity to be happy. It is very difficult for an orphan child to rebuild his or her life again. Some children will manage to live without parents but some children may not.

What kind of facility should we to provide for the children on street?

- We shell provide shelter and all basic facilities for the children who live on the street.
- We should provide them good education
- We should also gurantee them safety for their life.
- When we come to know that they are homeless we should enquire and provide them care and protection.

बच्चों का चाहिए प्यार

मैं यहां आपको यह बताना चाहती हूं कि माता-पिता के बिना बच्चों के लिए रहना कितना मुश्किल हो जाता है। मैं अपनी ही कहानी सबसे साझा करना चाहती हूं।

मेरा नाम धनलक्ष्मी है। मेरे परिवार में मां, दो बहनें और एक भाई था। मेरी मां ही सारा घर चलाती थीं, लेकिन उन्हें कैंसर हो गया और उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद मेरी बड़ी बहन ने पढ़ाई छोड़ दी और वह एक घर में नौकरानी के तौर पर काम करने लगीं। वह ही सारे बच्चों का पालन करती थी। सब बहुत रोते थे और मां को याद करते थे। हमारी एक पड़ोसी प्रिया ने हॉस्टल के बारे में बताया। हम तीनो वहां आ गए और फिर से जिंदगी शुरू की। मेरी बड़ी बहन बी.कॉम दूसरे साल में है और उसने 78 फीसदी नंबर पाए थे । मेरी छोटी बहन पढ़ाई में बहुत अच्छी है। मैं ड्राइंग में अच्छी हूं और मैं आर्किटेक्ट बनना चाहती हूं। मेरी एक ही इच्छा है कि दुनिया में अपने बच्चों को छोड़कर किसी भी मां-बाप को कहीं नहीं जाना चाहिए। कई बार बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए मां-बाप दूर चले जाते हैं, लेकिन वे ध्यान रखें कि बच्चों को सबसे ज्यादा उनका प्यार चाहिए होता है।

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

Life with in garbage

Shahana
10th std
APMWS home,
Hydrabad

Vennella is 16 year old girl collecting garbage. She got married when she was a child. She doesn't remember about her marriage as she was very young at that time. Now she has two daughters and one son and they are very poor. They don't go to school and actually they don't know what a school is. Venella's husband is a rag picker. They stay at Dabirpura Railway station or on foot paths, and sometimes also on roads. They will have their food when somebody distributes it otherwise they sleep without having food. They have only one dress to wear .When we asked vennella that how she is living in one pair, she said that one dress is enough to cover from bad people who look towards them very badly and sometimes they have to suffer from eve teasing. She has to face many problems due to lack of hygiene. If they get ill then there is nobody to take care of them. They are very poor because after working in garbage they will not get eneough money to survive as only food needs are met. Then how will they take care of other needs?

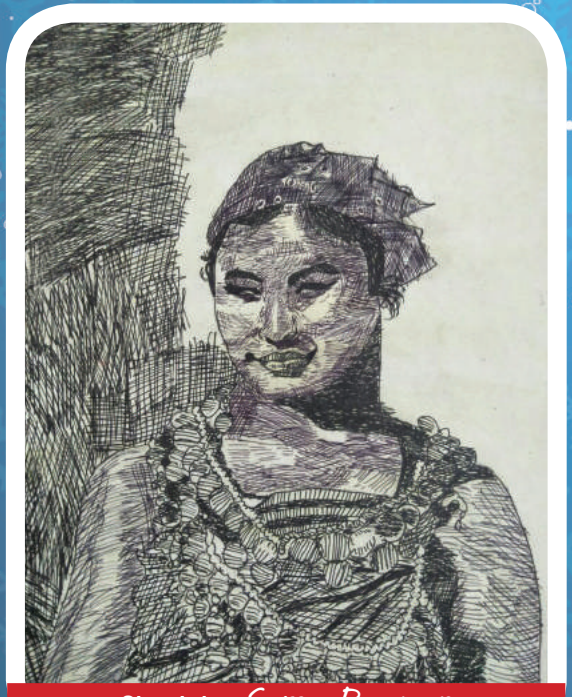

Sketch by: Sama Parveen
Hydrabad Rainbow homes

कूड़े से जूझती जिंदगी

विनीला की उम्र 16 साल है और वह कचरा चुनने का काम करती हैं। उसका बाल विवाह हुआ था। उसे अपनी शादी के बारे में याद नहीं, क्योंकि वह उस समय बहुत ही छोटी थी। अभी उसकी दो बेटियां और एक बेटा है। वे बहुत गरीब हैं। कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता है। विनीला के पति भी कचरा चुनने का काम करते हैं। वे डाबिरपुरा रेलवे स्टेशन, फुटपाथ और कई बार सड़कों पर सोते हैं। उनके पास पहनने को सिर्फ एक ड्रेस है। इसके बारे में उन्होंने कहा कि एक कपड़े से ही वह खुद को ढकती हैं क्योंकि लोग गंदी निगाह से उन्हें देखते हैं, छेड़ते हैं। लोगों से खुद को बचाना बहुत मुश्किल है। कचरे से ज्यादा पैसे नहीं मिलते हैं, इसलिए कई बार तो भूखे ही सोना पड़ता है। सारी मेहनत पेट भरने में ही लग जाती है, फिर बाकी जरूरतों का क्या करें।

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

LETTERS

चिट्ठी आई है

MAIL

POSTCARD

मेरा नाम तन्नु कुमारी है, मैं चाहती हूँ कि जैसे रेनबो साथी में कविता, कहानी आदि छपते हैं वैसे ही जितने भी रेनबो होम हैं उनका नाम पता छपना चाहिए। मैं चाहती हूँ कि मेरा नाम भी रेनबो साथी में छपे। रेनबो साथी में कहानी और चुटकुले छपें तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।

Tannu Kumari. Class-6, age- 12 years,
Khilkhilahat Aman BIradri Rainbow home, Rajvansi Nagar, Patna.

हमे कहानी पढ़ना बहुत पसन्द है, हम चाहते हैं कि रेनबो साथी में कहानियां छपें। हम चाहते हैं कि रेनबो साथी में और भी बच्चियां जुड़ें तरह-तरह कि कहानियाँ और कवितायें लिखें।

Rachna Kumari, class-6, age-12 years.
Khilkhilahat Aman BIradri Rainbow home, Rajvansi Nagar, Patna.

हम रेनबो होम के बच्चे अक्सर सोचते थे कि दिल्ली, चेन्नई, बंगलौर और कलकत्ता जैसे शहरों में रहने वाले हमारे ही जैसे बच्चे जो दूसरे होम में रहते हैं, कैसे होंगे, क्या सोचते होंगे, ऐसे में हमें एक प्यारी पत्रिका मिली है जिसका नाम है रेनबो साथी। एक ऐसी साथी, जो देश भर में हमारे तमाम दोस्तों से हमें मिलवाती है। रेनबो साथी के जरिये हम जानते हैं कि दिल्ली के हमारे दोस्त क्या सोचते हैं, बंगलौर के हमारे दोस्त किस बात पर कविता लिखते हैं।

कई बार किसी एक ही विषय पर हम सभी, देश के अलग-अलग हिस्सों से लिखते हैं, इस तरह हम सब एक दूसरे से मिले बिना भी मिल लेते हैं, दूर बहुत दूर बैठ हम दोस्त बन जाते हैं। थैंक यू रेनबो साथी।

बजरंगी, कक्षा 4, स्नेह घर
कुम्हरार, पटना

ERS

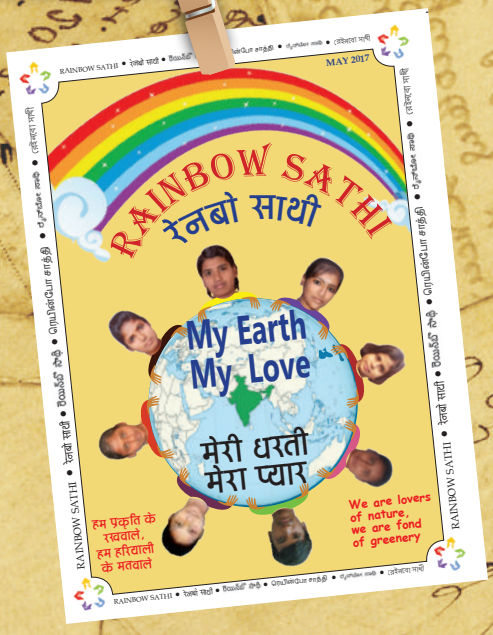

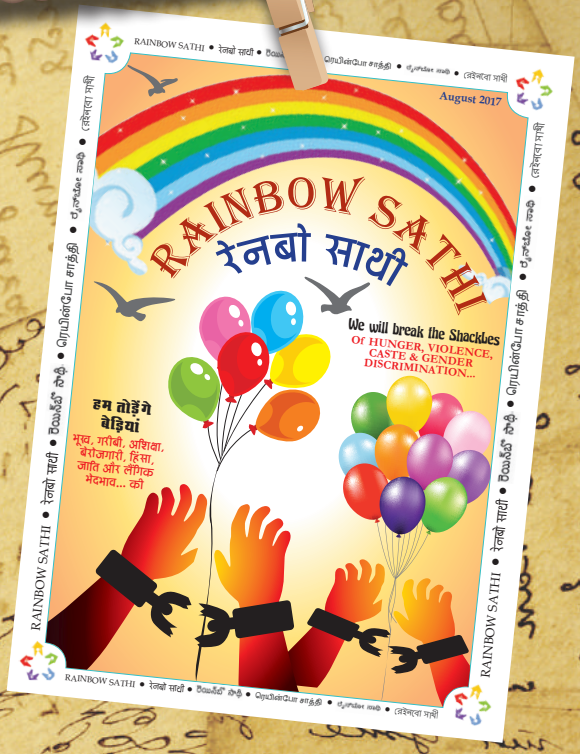

POST OFFICE

POSTCARD

In rainbow sathi I got a platform to share my emotions & experiences. This is very important for us as we come from different background.

I finished my SSC with good grade of 8.3 from Kasturba Gandhi Vidyalaya. Presently I am doing diploma in Polyclinic from St. Mary's college in Hyderabad. I feel, to every child along with food, shelter and clothing emotional support is also needed.

Laxmi-XI, APMWS Home.Hyderabad

The Rainbow Sathi helps all the rainbow children in India to share their thoughts and ideas and gives a feeling that we are united.

Shruti Mondal, Kolkata

Rainbow Sathi is symbol of togetherness. It is a main centre where we stand as one and my humble request to Rainbow Sathi is that stay with us forever because its through you that we show our talents in other activities like story writing, poem writing and our experiences in various programme. Though we don't get to communicate with each other face to face, yet we are together in the Rainbow. It is facinating

Miru Mandi, kolkata

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

चिट्ठी आई है

Rainbow Sathi Magazine provides an opportunity to the children to express themselves through writing. The children are so talented that they come up with unique experiences of their life. In our society most of the people are considering these deprived children very neglectfully. But these children have proved that if they also get similar opportunity like a normal child, then they also can become a diamond.

Rajashree, Co-ordinator Kolkata

POSTCARD

It has become a mouth piece of Rainbow Homes work besides honing the creative and writing skills of the children. In the process, after arranging the skype call with Bhashaji with the editorial team, I sent a mail to all to contribute write - ups. I observed that in certain homes children write very well and they keep sending good articles. I look for contributions from all 18 homes and motivate them. It is also a fact that children are burdened with their academic work and here the creative writing and research on the theme takes given a back seat.

Dr. Salman Arshad
Coordinator, Patna

This magazine helped me to understand the talents which were not so far exposed. Every time we arranged for video calls with Bhasha Ma'am, the children found it exciting to listen to the different topics and it also helped the children on getting an idea on how to write on a particular topic. The children share their works published in the magazine to their teachers and their classmates. This also encourages other children in the homes to participate in the coming issues.

Hope it will benefit to many other children and also to the entire team at rainbow homes.

Shiny Vincent
Coordinator,Bangalore

Rainbow Sathi started with the aim of bringing out children's voices to the fore. Their views on nutrition, health, safety, protection, education, aspirations or reaching out to the community, have wisdom and maturity as they are involved with the teams in all these processes. These expressions and the experience that the children bring from their past on the streets needed a space therefore the envisioning of Rainbow Sathi. Being a part of this plan since last one year has been an enriching experience. It was a pleasure watching the young child journalists and citizen journalists take up their tasks, interview, recording and writing.

Deepti, Coordinator, Delhi

Whenever I hold and experience the contents of the Rainbow Sathi, it would always connect with my soul because of its original thinking and creativity of our children. This platform is shaping their inner potentiality of original thinking and spreading the joy of creativity, anguishes, and exposure to new thoughts, successful proven solutions and their aspirations.
Rainbow Sathi would help in achieving our mission of creating a responsible and caring citizen by making them aware of social issues and sharing their feelings on them ,developing the skills of storytelling and writing

A. Anandaraj Coordinator - Chennai

Rainbow Sathi has provided a platform for our children to creatively express themselves about topics of social relevance. It has given them an opportunity to share their own feelings as well as meet people from different fields, learn the skills of interviewing them and present it in a structured way.

Shubadha, Coordinator, Pune.

POSTCARD

हमे रेनबो साथी पढ़ना अच्छा लगता है। हम चाहते हैं कि जो बच्चे बाल मजदूरी करते हैं, उनको उससे निकाला जाना चाहिए। ऐसी बच्चियों को पढ़ाना चाहिए जिससे वो अच्छी नागरिक बन सकें। लड़कियों से घरों में काम नहीं करवाना चाहिए। जो भीख मांगती हैं उनको उस माहौल से निकालना चाहिए।

Anju Kumari, Class-4, Age- 11 Years.
Khilkhilahat Aman Blradri Rainbow home, Rajvansi Nagar, Patna.

रेनबो साथी पढ़कर हमको बहुत अच्छा लगा, इससे मुझे समझ आया कि हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिए जैसे पार्वती ने मेरी मदद की। पहले मुझे कहानी और कविता नहीं आती थी, जब हम रेनबो होम में आये तो धीरे धीरे सीख गए।

Reena, Class- 4, Age- 10 Years.
Khilkhilahat Aman Blradri Rainbow home, Rajvansi Nagar, Patna.

रेनबो साथी हमारे होम में हैं और हमने उसे पढ़ा है। उससे हमने कई महत्वपूर्ण मुद्दों को समझा है, जैसे भूख से आजादी। हमने इससे जाना कि भारत में बहुत से गरीब और बेघर लोग हैं, दूसरी ओर ऐसे अमीर लोग हैं जो बड़ी-बड़ी गाड़ियों में घूमते हैं। एक तरफ ऐसे लोग हैं जो भूख की आग में जलते हैं, दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो खाना बरबाद करते हैं। अगर यही खाना गरीब लोगों को दे दिया जाये तो उन्हें भूख से मरना नहीं पड़ेगा। हम कहना चाहते हैं कि हमे धन नहीं अन्न चाहिए। हमे अपमान नहीं सम्मान चाहिए।

रेनबो साथी पढ़ने से हमें पाता चलता है कि दूसरे होम के बच्चे क्या कर रहे हैं। रेनबो साथी से जुड़ कर हमे बहुत अच्छा लग रहा है।

Amita, Class-4, Patna.

The Rainbow Magazine helps our rainbow children living in different environment and states to keep us connected by updating several news feeds based on different topics.

Tania Roy, kolkata

रेनबो साथी नाम बहुत प्यारा है। मैं चाहती हूँ कि रेनबो साथी में पेज संख्या और बढ़ानी चाहिए जिससे हम ज्यादा बच्चों को पढ़ पायें। हमारे देश में भुखमरी और गरीबी लगातार बढ़ रही है। हमें जगह जगह जाकर समझाना पड़ेगा कि लोग ज्यादा बच्चे पैदा न करें, इससे शायद भुखमरी, गरीबी और बीमारी की समस्या कम होगी।

Kajal Singh, Patna.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

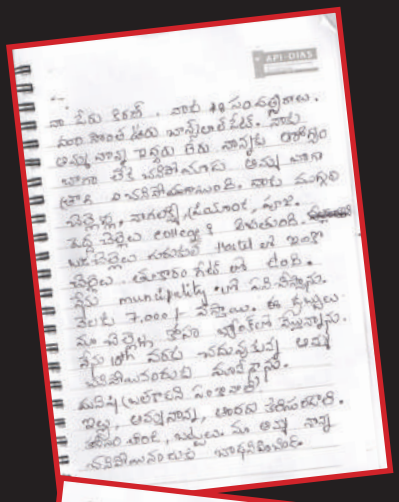

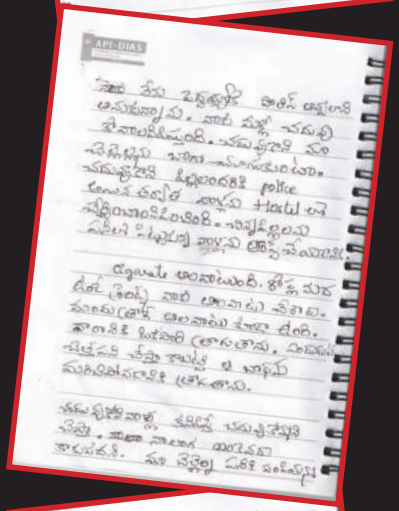

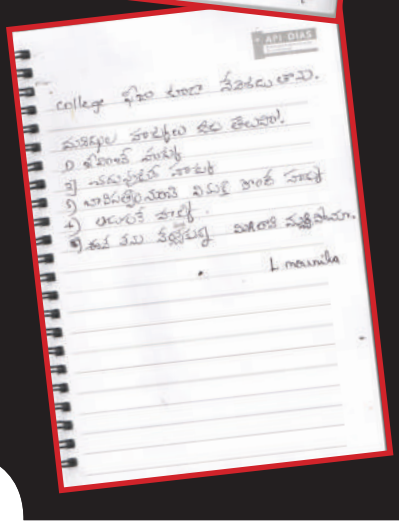

L. Mounika of Medibavi Aman Vedika Rainbow home interviewing a street child Kiran in Hyderabad

WANT TO STUDY AGAIN

Kiran is an 18 year old orphan. He lives in Bansi Lalapet slum area of Hyderabad. His father died of illness and mother due to alcoholism. He has three sisters- Nagalaxmi, Priyanka and Pooja. Eldest Nagalaxmi goes to college, while Priyanka is studying in a Government Gurukul school and the youngest Pooja is in Rainbow home. Kiran passed 10th class but then dropped out of school because of family problems. Now he is working in Municipality as casual labourer and collecting garbage. He gets a salary of Rs 7000 per month, which helps him in meeting the educational needs of his sisters. He loves them very much and wants them to get settled in life. He feels that for a person to survive one has to have basic, food, shelter and clothing apart from care of parents. Kiran wanted to become a policeman and arrest all those who employ children as labour. He often feels like continuing his studies once again. He is habituated to smoking which was introduced by his friends on street. He also said that sometimes to avoid the stinking smell of garbage he consumes alcohol. He always encourages children to go to school.

पुलिस बन बाल मजदूरी रुकवाता

हैदराबाद में कई रेनबो होम्स हैं और वहां सड़क पर रहने वाले बच्चों की रेनबो होम्स में आवाजाही रहती है। हैदराबाद के मेडिबावी, रेनबो होम्स में रहने वाली एल. मॉउनिका ने किरन से बातचीत की।

किरन की उम्र 18 साल है। वह अनाथ है। वह हैदराबाद के बंसी लालपेट झुग्गी इलाके में रहते हैं। उनके पिता का निधन बीमारी से हुआ और मां नशे की वजह से मर गई। वह अपनी बहनों को पढ़ा रहे हैं। सबसे बड़ी नागलक्ष्मी कॉलेज जाती हैं और दूसरी बहन प्रियंका सरकारी गुरुकुल स्कूल और तीसरी पूजा रेनबो होम्स में है। किरन ने 10वीं तक पढ़ाई की और उसके बाद पढ़ाई छोड़ दी। घर की समस्याएं इतनी बढ़ गईं,तो किरन को कमाई करने के लिए निकलना पड़ा। इस समय वह नगरपालिका में अस्थायी मजदूर के तौर पर काम कर रहे हैं और कचरा उठा रहे हैं। हर महीने उन्हें 7000 रुपये तनख्वाह मिलती है। वह किसी तरह से इतनी कमाई में अपनी बहनों को पढ़ा रहा है।

किरन को लगता है कि किसी भी व्यक्ति को जिंदा रहने के लिए बुनियादी सुविधाएं होनी चाहिए जैसे कि खाना, घर और कपड़ा। उनका मन करता है कि वह पुलिस अधिकारी बनकर बाल मजदूरों को रखने वालों को गिरफ्तार कर लें। वह शराब पीते हैं क्योंकि उन्हें गंदगी की बदबू बर्दाश्त नहीं होती।

खुशी रेनबो होम, दिल्ली में बच्चों ने बनाई वॉल पेंटिंग

Kishor,
5th STD, 11 Years,
Sneh ghar Amlatola,
Patna

If all villages become like this

There is a village named Dharhara. In this village girls are respected equally like boys or perhaps even more. Here girls get equal opportunity for education like boys do. They get respect and freedom like boys. Effect of Dharhara can be seen in surrounding villages also. Child marriages are strictly prohibited in this village, and even in nearby villages. In this village girls are educated and economically independent. The socio-economic status of the village has improved a lot. Girls also contribute to the development of society. If all the villages of our country become like Dharhara, then country will grow like anything.

हो जाएं सभी गांव ऐसे

एक गांव है जिसका नाम है धरहरा। इस गाँव में लड़कों से ज्यादा लड़कियों का सम्मान किया जाता है। यहां लड़कों से ज्यादा आजादी लड़कियों को मिली हुई है। यहां लड़कों के जैसी ही शिक्षा, सम्मान और आजादी लड़कियों को भी है। धरहरा का प्रभाव अगल-बगल के गांवों पर भी पड़ा है। धरहरा में बाल विवाह पर रोक है, गांव वाले बाल-विवाह न तो करते हैं और न किसी को करने देते हैं। यहां लड़कियां भी लड़कों की ही तरह शिक्षित होकर अपने और अपने समाज के विकास के बारे में सोचती हैं।

काश इसी तरह सब लोग सोचें तो हमारा देश कहां से कहां पहुंच जाए।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Dreams in their eyes

How difficult is life on streets and especially for girls. Those who are living in secured environment of home and care can't even imagine this. Kanchan Paswan of Class XI from Loreto Rainbow Homes at Bowbazar, Kolkata interviewed three children. Here are the excerpts…

Nisha Shaw

Nisha Shaw is sixteen years old. Her mother Gita Shaw has died and after that her father Sankar Shaw also left her and went away. Her elder sister took responsibility of her. She has been staying on the pavement since 2001. Before coming here her family lived in a village but now they don't have any connection with the village. As she grew up she was sent to Ranaghat School and then after some years she joined Loreto Rainbow Bowbazar. She stayed there and studied in St. Georges. But soon she ran away as she was not interested to stay at Rainbow Home. Now she is working in a nail polish factory. She has two brothers and one elder sister. They don't cook food in the morning as police does not allow them to cook food during the day time. She now earns Rs 900 per week. They have to face many problems on the pavement. At night when they sleep drunkards and thieves will come and take away their personal belongings and even try to abuse them. They don't have any access to toilets and bathrooms therefore they take bath in "dariya cal" and go to "pay and use toilet". In rainy and winter season it is very difficult to survive. During rains water accumulates in front of their pavement. They use plastic sheets to protect themselves from water and rain. Rainbow Home Bowbazar gave her shelter to sleep and food to eat at night. She wanted to become a teacher but could not fulfill her dream. She wished to go and live in Delhi. She also likes to dance.

Rakhi Mouli

Rakhi Mouli is 14 years old and is studying in St. Georges. She has been staying on the pavement since her childhood. She has a village but she goes there only during vacations. Her mother has passed away and now her father takes care of her. Her father sells clothes at different places. Her brother used to study but due to problems in payment of school fees he left his studies and started doing some job. Rakhi wishes to stay in a proper house in future.

Rupa Paswan

Rupa Paswan is 13 years old. She is studying in class 7th in St. Georges. She had

YEAR OF RAINBOW SATHI

been staying in Rainbow Home but she left rainbow home two years ago. She has her own house in village but she goes there only during vacations. She and her family have been staying here since 1995. Her mother's name is Bina Devi and her father's name is Surinder Paswan. They both are wood cutters. They bring the wood they cut and sell it in different places. She also goes to pay and use toilet. There is a lot of problem of sanitation. When it rains, the water gets stagnant in front of their house. Due to this they suffer from diseases like malaria and dengue. They have to go nearby government hospital. Every year Kolkata municipality personnel will come and take away their belongings after destroying their house. She feels difficulty in studying as there is no light in her house. She wishes to become a dancer.

उनकी आंखों के सपने

सड़क पर जीवन गुजारना बहुत मुश्किल है, खासकर लड़कियों के लिए तो और भी। लोरेटो रेनबो, बाउबाजार की कक्षा 11वीं की छात्रा कंचन पासवान ने ऐसी ही तीन लड़कियों से बातचीत की, जिनको जिंदगी की मार ने सड़क पर पहुंचा दिया।

निशा शॉ: निशा 16 साल की हैं। उनकी मां गीता शॉ का निधन हो चुका है और पिता शंकर शॉ उन्हें छोड़ कर कई साल पहले भाग गए थे। उनकी बड़ी बहन ने उन्हें पाला-पोसा। वह फुटपाथ पर 2001 से रह रही हैं। वह रानाघाट स्कूल में गईं, कुछ साल के लिए लोरेटो रेनबो बाउबाजार में भी और उसके बाद में सेंट जार्ज में। लेकिन वह भाग गई, वहां मन नहीं लगा। अभी नेल पालिश फैक्टरी में काम कर रही हूं। सबसे बड़ी मुश्किल है खाना बनाने की, पुलिस भगाती रहती हैं। रात में शराबी और चोर परेशान करते है, छेड़ते हैं, बदमाशी करते हैं। लगातार डर लगा रहता है कोई हमारे साथ गलत न करें। सड़क पर दुर्घटनाएं होती रहती है। नहाने की जगह नहीं है, सड़क पर या पैसा देकर टायलेट इस्तेमाल करते हैं। मैं टीचर बनना चाहती हूं, लेकिन मुश्किल है। मैं दिल्ली में रहना चाहती हूं और मुझे डांस करना पसंद है।

राखी मौली: राखी 14 साल की हैं और सेंट जार्ज में दूसरी क्लास में पढ़ती है। वह बचपन से सड़क पर रह रही है। उसकी मां का निधन हो गया, पिता ही ध्यान रखते हैं। पिता कपड़ा बेचते हैं और भाई भी नहीं पढ़ पाया क्योंकि फीस देने के पैसे नहीं थे। राखी ने बताया, राखी ने ख्वाहिश की कि भविष्य में उसके पास रहने के लिए एक अच्छा घर हो। राखी को संगीत सुनना बहुत पसंद है।

रूपा पासवान: रूपा 13 साल की हैं और सेंट जार्ज स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ती है। वह पहले रेनबो होम में रहती थीं, लेकिन दो साल पहले इसे छोड़ दिया। गांव में घर है, लेकिन वहां कोई है नहीं, इसलिए वहां नहीं जाती। उनकी मां का नाम बीना देवी है और पिता का नाम सुरिंदर पासवान है। दोनों लकड़ी काटते है और जगह-जगह बेचते हैं। फुटपाथ पर रहने की वजह से टायलेट की बहुत दिक्कत होती है। पे एंड यूज़ वाला टायलेट भी बहुत गंदा होता है और पैसा देना पड़ता है। बरसात और सर्दियों में फुटपाथ पर रहने में बहुत दिक्कत होती है। झुग्गी के आगे पानी जमा हो जाता है। इससे मलेरिया भी हो जाता है। कई बार नगरपालिका उनके घर को तोड़ देती है।

YEAR OF RAINBOW SATHI

My Autobiography

Rina Das,
class-8, age 14.
Loreto House
Rainbow Home

I am Rina Das. I am staying at Loreto House Rainbow Home. I was born in Kolkata. In my childhood I was with my mother, father, elder sister and brother. My father died when I was only 2 years old. After my father's death we started to realize that we are going through dearth. Often we could not eat due to the poverty. Then my mother put both of us sisters at Rainbow Home and our brother in another hostel. I was admitted at the Rainbow Home at the age of 3 years.

My mother used to work as a maid in many houses for us. She used to work whole day and come back in the evening. She never let us feel that we have lost our father. She gave me affection, protection and love. When I was small I will always go along with my mother because I didn't want to lose her. I felt too affectionate for her and always thought that when I will grow big, I will keep her like a queen. Every day in the evening she used to tell me stories. While listening to the stories I would always like to catch her shadow. She was also my best friend. When I was in 5th class, my mother

मेरी जीवन गाथा

मेरा नाम रीना दास है। मैं लोरेटो हाउस रेनबो होम में रहती हूं। मेरा जन्म कोलकाता में हुआ। बचपन में घर पर मेरे माता-पिता, मेरी बड़ी बहन और एक भाई रहते थे। जब मैं दो साल की थी तो मेरे पिता का निधन हो गया। हमारे बहुत खराब दिन शुरू हो गए, कई-कई दिन बिना खाने के रहना पड़ता था। मेरी मां ने हम दोनों बहनों को रेनबो होम और भाई को एक हॉस्टल में डाल दिया। मैं तीन साल की उम्र में ही रेनबो होम्स आ गई थी। मेरी मां कई घरों में झाड़ू-पोछे-बर्तन का काम करने लगी। मैं हमेशा अपनी मां से चिपकी रहती, डर लगता कि कहीं मैं उसे खो न दूं। मैं सोचती थी कि जब बड़ी हो जाऊंगी तो मां को रानी की तरह रखूंगी। वह मेरी दोस्त थी। जब मैं पांचवीं कक्षा में आई तो मां बीमार पड़ी, दो महीने बाद पता चला कि उन्हें पीलिया है, और फिर चार महीने बाद पता चला कि उन्हें कैंसर है। मेरी बड़ी बहन और हम उनका इलाज नहीं करवा पाए क्योंकि

suddenly became sick. After two months she was diagnosed with jaundice. I and my elder sister took her to a hospital and there the doctor said that she will die soon. After four months she was diagnosed with cancer. My elder sister could not buy medicines for her because they were very costly. Without proper treatment my mother died on 10th February 2015. We had only one maternal aunty who arranged for my mother's funeral.

After my mother's death aunty also stopped taking care of us. My brother came back to home because no one was there to pay his hostel fees. My brother started to work in the roadside small hotels. We tried many times to put him in a hostel, but we failed. Suddenly we got news that he is missing. Rainbow Home team helped us in finding him and then police put him in a Home.

Now we all three feel satisfied that at least we have somebody to look after us. But sometimes I miss my parents terribly. Everybody's parents will come to meet their daughters at the home, but we don't have anybody to come and meet us. I can feel the pain deep inside me. I want to become a doctor. I want to help people who are poor and don't have enough money for treatment. I don't want anyone to die without treatment. I am trying hard to become a doctor so that I can do their treatment. And anyhow, it was my mother's dream that I should become a doctor. I want to fulfill that.

हमारे पास इतने पैसे नहीं थे। मेरी मां 10 फरवरी 2015 को हमें छोड़ कर चली गई। हम बेसहारा हो गए। भाई हॉस्टल से बाहर आ गया, सड़क किनारे ढाबे पर काम करने लगा और फिर एक दिन गायब हो गया। बाद में रेनबो होम टीम की मदद से उसे खोजा। अब हम तीनों भाई-बहन रेनबो होम में रहते-पढ़ते हैं। मैं अपनी मां को बहुत मिस करती हूं। जब सबकी मां मिलने आती हैं तो मेरे दिल में बहुत टीस होती है। लगता है काश मेरी मां आ जा जाए। मैं पढ़कर डॉक्टर बनना चाहती हूं ताकि गरीबों का इलाज कर सकूं। सपना था जो मैं पूरा करना चाहती हूं।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Newsletter of Rainbow Homes (for private circulation only)

Open Hearts, Open Gates...

Rainbow Homes Program - ARUN works with Rainbow Homes (for girls) and Sneh Ghar (for boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care, Food, Shelter, Health and Education.

Anna Dhara Campaign

The Anna Dhara campaign is an attempt to reach out to supporters like you from the civil society to make a difference in the lives of children living in Rainbow Homes and Sneh Ghars located in 45 Govt & Private Schools in 8 states.

- providing minimum of a day's meal for 100 children
- share life nourishing values with children

Bank Details:
Bank A/C Name: ASSOCIATION FOR RURAL AND URBAN NEEDY (ARUN)
BANK : Yes Bank Ltd
A/C No: 042494 600000102
Branch : ABIDS, Hyderabad
IFSC : YESB0000424

Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656

2 YEAR OF RAINBOW SATHI

दीवारों के साथ-साथ दिल को भी रंगते हैं बच्चे, आजाद अभिव्यक्ति के विरले नमूने: *खुशी रेनबो होम, दिल्ली में बच्चों द्वारा बनाई वॉल पेंटिंग*

चंदा, कक्षा - 11
कबीर बस्ती उन्नति गर्ल्स होम, दिल्ली

WANT TO BECOME AN IAS

My name is Chanda and I study in class 11th. I want to become an IAS. For this I need education and full support and help of my family and teachers. Along with studies I need home. To remain healthy I need good nutritious food. I have a dream that in this country everyone should have house to live, clothes to wear and food to eat. I have seen many people in my life who search and try to find out their food from garbage. There are many girls who are kept deprived of education and their fundamental rights. Many girls are forced to become house maids. They are exploited. In our country there are millions of girls who have wonderful dreams in their eyes, but they are not allowed to fulfill them.

I teach Ms. Ruma, who lives in Mahila Samman Ashiyana. She has three children. Ruma didi want to study because she wants to help her children in studies. Daily she finishes her household work early so that she has time to study

आईएएस बनने का सपना

मेरा नाम चंदा है और मैं ग्यारहवीं में पढ़ती हूँ। मैं IAS बनना चाहती हूँ। उसके लिए मुझे सबसे ज्यादा जरूरत है शिक्षा की और साथ ही अपने परिवार और अध्यापिकाओं की मदद की। पढ़ने के साथ-साथ मुझे एक घर की जरूरत है और स्वस्थ्य रहने के लिए अच्छे खाने-पीने की। मेरा सपना है कि मेरे देश में सभी को रहने के लिए घर, पहनने के लिए कपड़े और भोजन मिले। मैं रोज कई ऐसे लोगों को देखती हूं जो कूड़ेदान से उठाकर अपना खाना खाते हैं। ऐसी कई लड़कियां हैं जिन्हें शिक्षा तथा अपने मौलिक अधिकार से वंचित रखा जाता है। अधिकतर लड़कियों को छोटी उम्र से ही कोठियों में काम करने भेज दिया जाता है और उन पर अत्याचार होते हैं। हमारे समाज में लड़कियों को वस्तु समझा जाता है। हमारे देश में कई ऐसी लड़कियां हैं जिनके आँखों में सपने हैं लेकिन उन्हें ये सपने पूरे करने का हक नहीं दिया जाता। इन लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। दिल्ली में ही ऐसी बहुत महिलाएं हैं जो पढ़ना चाहती हैं तथा अपने हाथ से कौशल सीखना चाहती हैं। मैं चाहती हूँ कि इनके लिए कुछ किया जाए।

मैं महिला सम्मान आशियाना की एक महिला को पढ़ाती हूँ। उनका नाम रुमा है। उनके तीन बच्चे हैं। उनके पति भी काम करते हैं। वो चाहते हैं कि वो और उनके बच्चे आगे बढ़े। रुमा दीदी इसलिए पढ़ना चाहती है ताकि वो हर क्षेत्र की जानकारी अपने बच्चों को दे सकें। वो खाना बनाने का काम करती हैं। रोज जल्दी से अपना काम करके वो पढ़ने बैठ जाती है। वो चाहती हैं कि उनके बच्चे भी बड़े हो कर सड़क पर रह रही महिलाओं को पढ़ाएं। इनको पढ़ाने का मेरा सपना भी धीरे-धीरे पूरा हो रहा है। मेरा मन है कि मैं रुमा दीदी की तरह और भी महिलाओं को पढ़ाऊँ।

YEAR OF RAINBOW SATHI

3D RAINBOW FESTIVAL

As a Rainbow family, we celebrated Rainbow festival from 29th September to 2nd October 2017. Mr. Bhadur and Mrs. Vanaja started the festival celebration in a joyful note.

Children from both the Rainbow Homes of ARUN (Chepet and Kosapet), and also our older children from Annai Satya Hostel, Chennai and St. Aloysius college, Bengaluru participated. Nearly about 100 children and 24 staff members gathered to celebrate the festival.

FIRST DAY: Children started making mehandi designs on their hands. Whole premises were decorated to resemble a festival mood. As it was the season of Aayudhapooja festival in Tamilnadu, the home children and the staff celebrated the pooja. all Shared the sweets, fruits and pori (puffed rice).

SECOND DAY: The children went to a park in Annanagar called Tower Park. Children played, enjoyed the day and had lot of fun, games, dance etc. Second half of the day was for an interesting puppet show. Then we went to Marina beach in the evening with the packed homemade snacks.

THIRD DAY: It was a Movie day. On 1st Oct 2017 children were taken to a movie called "Karuppan". This movie is about Tamil cultural game of "Jallikattuitu". All the children enjoyed watching the movie. This festival provided very good opportunity to interact with each other. Our older girls of the home shared their experiences as well as challenges they face when they are away from Rainbow Home and how they overcome the hurdles, also how to face the community. They also explained how Rainbow Homes played an important role to help them realise the importance of education and the unconditional love that they get here. The Vanavil Vizha (Rainbow Festival) ended with another important event of our Rainbow Homes called "Under the Star "to feel and experience the homelessness.

We made MOVIE

The Rainbow Home Patna's children got a rare opportunity through Children's Film Society of India. The children made a whole movie. This movie is about Child Marriage. Film also talks about children's rights. The children of Rainbow Home have done all the work related from story writing, acting, direction, production, make-up, editing and the film production.

It was all done under the guidance of Children's Film Society of India. This movie has now been sent to Mumbai for the selection process. If this film is selected, then it will be shown at the 'International Children's Film Festival' in Hyderabad next month. Anyhow we enjoyed & learned art of film making. It was a wonderful experience for every body.

রেইনবো সাথী • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • ரெயின்போ சாத்தி • రెయిన్‌బో సాథి • रेनबो साथी • RAINBOW SATHI

রেইনবো সাথী • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • ரெயின்போ சாத்தி • రెయిన్‌బో సాథి • रेनबो साथी • RAINBOW SATHI

Prayer प्रार्थना ప్రార్థన

God!

Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

ईश्वर अल्लाह

हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

దైవమా!

సృష్టిలో బాగంగా మాకిచ్చిన ఈ అందమైన జీవితం కోసం నీకు ధన్యవాదాలు!

మేమెంతా నిర్భయంగా తలెత్తుకొని ఆత్మాభిమానాలతో, పరస్పర గౌరవాలతో స్నేహంగా బ్రతకాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

స్త్రీలైనా, పురుషులైనా, వారి రంగు, కులం, మతం, వర్గం, సామర్ధ్యం, బాషా ప్రాంతం, ఏదైనా, మనుష్యులందరమూ సమానమేనని, నవ్వుతూ జీవించాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మమ్మల్ని విడదీసే ద్వేషపూరిత శక్తులను, సిద్ధాంతాలను బలంగా వ్యతిరేకిస్తున్నాము. ఇతరులకి జరిగిన అన్యాయాన్ని మాకే జరిగిందని భావిస్తూ, మానవత, న్యాయం, సత్యం, శాంతి, అహింస, ప్రజాస్వామ్య విలువలును నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మరింత మానవీయ స్వేచ్ఛా ప్రపంచ నిర్మాణంలో, ఆరోగ్యంగా ఆడుతూ, పాడుతూ, జ్ఞానాన్ని పెంచుకొంటూ, పంచుకొంటూమేము సైతం అంకితమవ్వాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము..!

దైవమా!

అనాదిగా సాగుతున్న, ఈ దివ్య ప్రేమపూరిత యాత్రలో, లక్షలాదిమందితో మా చిన్ని చేతులను కూడా కలపాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము...!

NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

Rainbow Homes Program

Rainbow Homes
EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

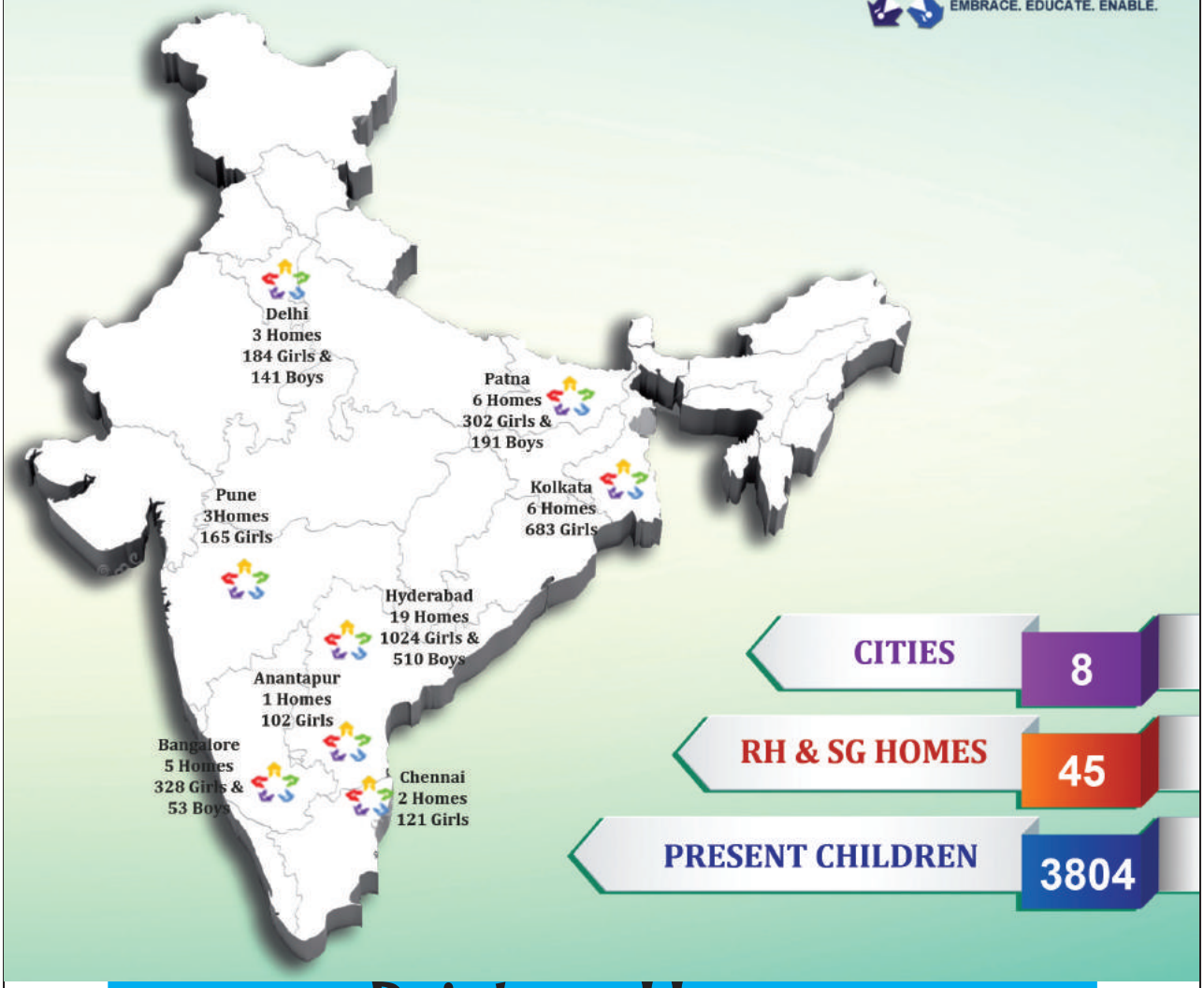

Rainbow Homes

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656